Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

AP–466

M.A. (Final) Examination, 2021

RAJASTHANI

Paper - IV (ii)

(मीरांबाई)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(सगळा सवालां रा उत्तर राजस्थानी में ई देवणा है।)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सगळा **दस** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरेक सवाल वास्ते **2** अंक अर **50** सबदां मांय देवणां है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात सवालां मांय सूं किणी **पांच** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **200** सबद अर **8** अंक राखीज्या है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार सवालां मांय सूं कोई **दोय** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **500** सबद अर **20** अंक राखीज्या है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

1. सगळां सवालां रा पडूत्तर देवो : (सबद सीमा **50** सबद)

   (i) मीरां रौ जलम कदै हुयो हो ?

   (ii) मीरां रै पिताजी रौ नांव कांई हो ?

(iii) मीरां रै पतिदेव रौ नांव कांई हो ?

(iv) मीरां रै बाळपणै रौ नांव कांई हो ?

(v) मीरां द्वारा रचित दोय काव्य रचनावां रा नांव बतावो।

(vi) मीरां रै विद्यागुरु रौ नांव बतावो।

(vii) ''म्हारा जूना जोसी हरजी मिलण'' उपरोक्त ओळियां में किणरौ जिक्र कर्‌यो गयो है ?

(viii) मीरां रा 'गिरधर नागर' कुण हा ?

(ix) मीरां रौ सुरगवास कठै हुयो हो ?

(x) 'मीरां-मुक्तावली' पोथी रा सम्पादक रौ नांव बतावो।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

नोट :– नीचै लिख्यां सात सवालां मांय सूं किणी पांच सवालां रा पडूत्तर देवो : (सबद सीमा **200** सबद)।

(सप्रसंग व्याख्या)

2. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

जांके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

भाई छोड्‌यो बन्धु छोड्‌यो, छोड्‌यो साथ सोई,

भगत देख राजी होई, जगत देख रोई,

संतन ढ़िग-बैठ-बैठ, लोक लाज खोई॥

3. राणाजी! म्हाने या बदनामी लागे मीठी।

कोई निन्दो, कोई विन्दो, म्हूं चालूंला चाल अपूठी।

सांकड़ली सेर्‌या जन मिळिया, क्यूं कर फिरूं अपूठी।

सत संगति मांय ज्ञान सुणैछी, दुरजन लोगां दीठी।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन बळो अंगीठी॥

4. बसो मेरे नैनन में नंदलाल,

मोहनि मूरति सावरि सूरति, नैना बने विशाल,

ऊधर सुधा रस मुरली राजित, उर वैजन्ती माला॥

क्षुद्र घंटिक कटि तट सोभित, नुपुर शब्द रसाल।

मीरां के प्रभु संतन सुजदाई, भक्त बछल गोपाल॥

5. आली री मेरे नयन वान पड़ी,

चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर विच आन अड़ी।

कब की ठाडी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी।

कैसे प्राण पिया बिन राखूं, जीवन मूल जड़ी।

मीरां गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै बिनड़ी॥

6. दरस बिन दूखन लागै नैन

जबसे तुम बिछुड़ै मोरे प्रभुजी! कबहुं न पायो चैन,

सबद सुणत मोरी छतियां कम्पै, मीठै लागै बैन।

विरह-बिथा कासूँ सजनी! बह गई करवत-अैन।

कल न परत, हरि मग जोवत, भई छमासी रैण॥

7. मीराँबाई रै जीवण-वृत्त री सारगर्भित जाणकारी दिरावो।

8. मीराँ री प्रेमाभगती व्यंजना नै स्पष्ट करो।

खण्ड–स प्रत्येक 20

नोट :– नीचै लिख्योड़ां चार सवालां मांय सूं कोई दोय सवालां रा पडूत्तर देवो : (सबद सीमा **500** सबद)।

9. मीराँ रै काव्य में सामंती विरोध रौ सुर नीगै आवै है ? इण कथन री पुष्टि सोदाहरण स्पस्ट करो।

10. मीराँ रै पदां रौ काव्य-सौन्दर्य ने उदाहरण सैती उजागर करावो।

11. मीराँ रै रुयै रौ सामाजिक परिवेस नै उजागर करो।

12. मीराँबाई रै पदां में नारी चेतना अर लोक जागरण रा भावां री ओळखांण उदाहरण समेत दिरावो।